

an>

Title: Need to take action against an industrialist alleged to be a willful bank defaulter.

**डॉ. किरित सोमैया (मुम्बई उत्तर पूर्व) :** माननीय सभापति जी, बैंकों में जो लूट मची है, मैं उसके बारे में कहने के लिए खड़ा हुआ हूँ। वर्ष 2007 से लेकर 2012 तक पांच साल में विशेष तौर पर पब्लिक सैक्टर बैंकों ने जिस प्रकार से बड़े लोगों को बैंकों ने कर्ज दिया है, उसके कारण स्थिति यह हो गई है कि पब्लिक सैक्टर बैंकों का लगभग 14 परसेंट स्ट्रैस एसेट्स की कैटेगिरी में आया है। किंग फिशर विजय माल्या तो एक नाम है, गैरे हाथ में जो फिगर्स हैं, जिन्हें हम बिलकुल डिफाल्टर कहते हैं।... (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : The matter is in the court.

DR. KIRIT SOMAIYA: I am not talking about Kingfisher. I am talking about wilful defaulters and NPAs. More than 64,000 crore wilful defaulters are there. इन विलफुल डिफाल्टर्स को किस प्रकार से पैसा दिया गया कि लोन के ऊपर लोन दिया गया, लोन के ब्याज का पैसा चुकाने के लिए लोन दिया गया। ये वर्ष 2007 से 2012 तक हुआ। मैं वित्त मंत्री जी से प्रार्थना करना चाहूंगा कि जो विलफुल डिफाल्टर्स हैं, इनका फॉरेसिक आडिट किया जाए कि पैसा कहाँ से कहाँ गया और उनसे पैसा वसूल किया जाए। किंग फिशर के मालिक विजय माल्या को भी वापिस बुलाया जाए। अगर कोई गरीब डिफाल्टर होता है तो कड़ा एक्शन लिया जाता है। मैं मांग करता हूँ कि पब्लिक सैक्टर बैंकों को कड़ा रुख अपनाना चाहिए।

HON. CHAIRPERSON:

Shri Bharion Prasad Mishra,

Kunwar Pushpendra Singh Chandel and

Shri Ashwini Kumar Choubey are permitted to associate with the issue raised by Dr. Kirit Somaiya.

**श्री राजेश रंजन (मधेपुरा):** महोदय, विजय माल्या जैसे लोगों का जन्म कहाँ से होता है और किस व्यवस्था से होता है। कोई ऐसा दल नहीं था, जिसके एमएलए ने वोट देकर विजय माल्या को राज्य सभा न भेजा हो। मैं पूछना चाहता हूँ कि देश के पूंजीपति लोग ही देश के ...\* क्यों बैठते हैं? क्या इसलिए क्योंकि सबसे ज्यादा लूट का पैसा इन्हीं लोगों के पास है। सिर्फ विजय माल्या का ही सवाल नहीं है। सवाल यह है कि कौन-सा ाल व्यवस्था है, बैंकों की बात कही गई कि एक बैंक ने 18 करोड़ रुपया विजय माल्या को लोन दिया। अगर किसी दलित, गरीब, किसान या मजदूर लोन चुकाए बिना मर जाता है तो उसकी मृत्यु के बाद भी लोन का पैसा वसूला जाता है लेकिन पूंजीपतियों की सब्सिडी और लोन हमारी सदन व्यवस्था और कोई न कोई सरकार उसे माफ कर देती है। उनकी सब्सिडी भी माफ की जाती है, ऋण भी माफ किया जाता है। आखिर क्यों हमारी राजनीतिक व्यवस्था हिंदुस्तान के पूंजीपतियों और बड़े लोगों के ऋण को माफ करती है।

महोदय, मैं कहना चाहता हूँ कि विजय माल्या ही केवल एक व्यक्ति नहीं है, बल्कि हजारों हजार विजय माल्या जैसे लोग देश में हैं जो लोन लेकर वापिस नहीं करते हैं। मैं सरकार से मांग करूंगा कि ऐसा विजय माल्या पैदा न हो और बाहर भाग जाए इसलिए जितने भी बड़े पूंजीपतियों ने लोन लिया है, उनकी जांच हो और किसी का भी ऋण माफ न किया जाए और सब्सिडी माफ न की जाए। महोदय, यह मंदिर हमारे पूर्वजों ने बनाया है, हमारे बड़े-बड़े विद्वान नेताओं ने बनाया है लेकिन लगता है कि ... \* मैं अंत में यही कहूंगा कि इस मंदिर से आम आदमी को न्याय मिले, इस मंदिर से गरीबों का न्याय हो और गरीबों को लूटने वाले विजय माल्या जैसे हजारों लोगों को, बड़े पूंजीपतियों को सजा मिले और वे जेल में बंद हों।

HON. CHAIRPERSON: Now, Dr. J. Jayavardhan.